International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(4): 30-32

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(4): 30-32
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 16-05-2020
Accepted: 17-06-2020

प्रीति रानी
संस्कृत विभाग, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
प्रीति रानी
संस्कृत विभाग, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

भास कालीन समाज पर रामायण कालीन समाज का प्रभाव

प्रीति रानी

प्रस्तावना
भासकालीन समाज पर रामायण कालीन समाज का व्यापक प्रभाव दिखाई देता है। भास ने जितने भी नाटक लिखे है उनका अध्ययन करने पर पता चलता है कि धर्म, आश्रम, संस्कार, व्यवहार आदि में बहुत कुछ समानताएँ दिखाई देती है। इससे प्रमाणित होता है कि भास का समाज रामायण के समाज के अति अनुकूल रहा है।

रामायण कालीन व्यवस्था
रामायण काल में चारों वर्णों के लोग साथ–साथ निवास करते थे।

श्रत्राब्रह्ममुखं चासीद् वेश्याः क्षत्रामनु व्रताः।
शुद्राः स्वकर्मनिरतास्त्रीान् वर्णानुपचारिणः।।

क्षत्रिय ब्राह्मणों का मुहँ जोहते थे, वैश्य क्षत्रियों की आज्ञा का पालन करते थे शूद्र अपने कर्तव्य का पालन करते हुए उपर्युक्त तीनों वर्णों की सेवा में संलग्न रहते थे।
महाकविभास ने अपने नाटकों में चारों वर्णों की व्यवस्था का वर्णन किया है।

दैवं रूपं ब्रह्मण तस्य वाक्यं
श्रात्रां तेजः सौकुमार्य बलं च।
यद्येव स्यात् सत्यमस्यान्तयजत्वं
त्यर्थोऽस्माकं शास्त्रामार्गेषु खेदः।। [1]

रामायण कालीन सामाजिक व्यवस्थाः
रामायण काल में नारियों के लिए इस लोक और पर लोक में एक मात्रा पति ही सदा आश्रय देने वाला माना गया है। पिता, पुत्रा, माता, सखियाँ तथा यह शरीर भी उसका सच्चा सहायक नहीं हैः–

न पिता नात्मजोकत्या न माता न सखीजनः।
इह प्रत्य न नारीणां पतिरेको गति सदाः।। [2]

रामायण में कवि वाल्मीकि ने राजा जनक की पुत्रियों के विवाह का वर्णन किया है। उन्होंने विवाह में दहेज स्वरूप बहुत अधिक धन दिया। राजा जनक ने बड़े हर्ष के साथ उत्तमोत्तम कन्याधन दिया नाना प्रकार की वस्तुएँ देकर महाराज दशरथ की आज्ञा से मिथिला के भीतर अपने महल में लौट आए।
भास ने रामायण से प्रेरणा लेकर ही अपने नाटक चारुदत्त में स्त्रीधन का वर्णन किया है। विवाह के पश्चात कन्याओं को आभूषण दहेज स्वरूप मिलते थे। वह स्त्रीधन या स्त्री–द्रव्य समझा जाता था। स्त्री के इस धन को पुरुष के लिए ग्रहण करना लज्जा की बात मानी जाती थी। चोरी किए गए आभूषण के बदले द्यूता द्वारा अपनी माता से प्राप्त रत्नावली वसन्तसेना को दे देता है।

मम ज्ञातिकुलाद् लब्धा शतसहस्त्र भूत्या
मूक्तावली। तामप्यर्यापुत्राः शौरीरतया प्रतीच्छति।
भवतु, एवं तावत् करिष्यामि।। [3]

संस्कार और आश्रम धर्म

परिवार उतना ही श्रेष्ठ होगा जितने व्यक्ति सुसंस्कारी होंगे। व्यक्ति को संस्कारवान बनाने के लिए उपयुक्त वातावरण बनाना परिवार द्वारा ही संभव है। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए परिवारों में संस्कार आयोजनों का विकास किया गया है। रामायण काल में इन पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता था। राम और सीता के विवाह के पूर्व राजा जनक राजा दशरथ से अपना मंतव्य प्रकट करते हुए कहते हैं कि हे नरश्रेष्ठ! यज्ञ के अन्त में ऋषि सम्मत विवाह होगा। राजा दशरथ द्वारा यह मंतव्य सुना गया, समाज के विभिन्न अंगों के पालन व पोषण का उतरदायित्व सद्गृहस्थ पर होता था। इसलिए गृहस्थाश्रम की श्रेष्ठता को ऋषि भी स्वीकार करते हैं।

सामान्य रूप से आश्रमों का अपना क्रम होता है। गृहस्थ आश्रम के पश्चात वानप्रस्थ आश्रम लिया जाता था। राम–लक्ष्मण ने भी 14 वर्ष के लिए वानप्रस्थ धारण किया था–

तवौ वैखानसं मार्ग भास्थितः सहलक्ष्मणः।
व्रतमादिष्टवान् रामः सहायं गुहमव्रवीत।। [4]

धर्म

रामायण में वाल्मीकि ने राम के द्वारा सीता जी को दान की महिमा बतायी है उन्होंने कहा है कि ब्राह्मणों को रत्नस्वरूप उत्तम वस्तुएँ दान में देना चाहिए और भोजन माँगने वाले भिक्षुकों को भोजन कराना चाहिए। इस प्रकार श्रीराम सीता को दान व धर्म की महिमा का निर्देश देते हैं।

विवाह संस्कार

रामायणकालीन समाज में मुहूर्त और शुभ घड़ियों का विशेष महत्त्व माना जाता था। सभी संस्कारों को करने के लिए मुहूर्त निश्चित होता था। रामचन्द्र जी अपने भाईयों के साथ विवाह के मंडप पर पहुँचते है। कन्यादान का शुभ मुहुर्त आने पर ही राजा जनक अपनी पुत्रियों का कन्यादान करते हैं।

दातुप्रतिग्रहीतृभ्या सर्वार्थाः सम्भवन्ति हि।
स्वधर्म प्रतिपद्य स्व कृत्वा वैवाह्यमुतमन्।। [5]

महाकवि भास ने विवाह का वर्णन अपने नाटकों में किया है। उनके नाटक 'अविमारक' में विलासिनी नलिनिक विवाह का मनोहारि वर्णन है। विवाह विधिः– मनु के अनुसार विवाह की आठ विधियाँ बताई गई है।

ब्राह्मों दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यास्तथासुरः।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमो मतः।। [6]

सुरक्षा व्यवस्था

लंकापुरी मतवाले हाथियों से व्याप्त तथा असंख्य रथों से भरी हुई थी। पुरी के चारों ओर बना हुआ सोने का ऊँचा परकोटा था जिसको तोड़ना बहुत ही कठिन था। उसमें मणि, मूँगे, नीलम और मोतियों का काम किया गया था। लंका के दक्षिण द्वार पर चतुरंगिणी सेना के साथ एक लाख राक्षस योद्धा डटे रहते थे।

त्रायन्ते संक्रमास्त्रा परसैन्यागते सति।
यन्त्रैस्तेखकीर्यन्ते परिखासु समन्ततः।। [7]

इस प्रकार की सुरक्षा व्यवस्था होती थी जो कि बहुत सुरक्षित थी।

गुप्तचर नीति

रामायण काल में राजा गुप्तचरों के द्वारा अपने शत्रु पक्ष की गतिविधियों को जानते थे। इसका वर्णन महाकवि वाल्मीकि ने रामायण में किया है–

तेषां विदितं किंचित् स्वेषु नास्ति परेषुवा।
क्रियमाण कृत वाणि चारेणावि चिकीर्षितम्।। [8]

अपने या शत्रुपक्ष के राजाओं की कोई भी बात उन से छुपी नहीं रहती थी। दूसरे राजा क्या करते हैं, क्या कर चुके हैं और क्या करना चाहते हैं। ये सभी बाते उन्हें गुप्तचरों द्वारा मालुम रहती थी।

दूत परम्परा

वाल्मीकि रामायण के सुन्दर काण्ड में राम दूत हनुमान का वर्णन किया है। जिसमें हनुमान सोचते हैं– भगवान श्री रामचन्द्र जी का कुछ कार्य है, जिसके लिए मैं तुम्हारे पास आया हूँ प्रभो! मैं तेजस्वी श्री रघुनाथ जी का दूत हूँ।

दूत का वध नहीं करना चाहिए ऐसा विभीषण अपने ज्येष्ठ भाई को समझाते हैं।

राजन धर्म विरुद्धं च लोकवृत्तेश्च गर्हितम्।
तव चासदृशं वीर कपेरस्य प्रभावणम्।। [9]

दूत के गुण

भास कवि ने दूत के गुणों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। दूत अत्यन्त विनम्र, राजनैतिक, मदुभाषी से युक्त स्वामी, भक्त धर्म का ज्ञाता, साम, दाम, दंड आदि नीतियों का ज्ञाता होना चाहिए। वह राजा का प्रतिनिधि होता है। अतः दूत को अपने स्वामी की प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाला कथन प्रस्तुत करना चाहिए। 'दूतवाक्य' में कृष्ण अत्यन्त चतुर कुशल और राजनीति में प्रवीण दूत है। उनके कथन और कार्य व्यवहार से सभी सभासद प्रभावित हो जाते हैं। यहाँ तक कि कुरु राजा धृतराष्ट्र वासुदेव कृष्ण के पैरों पर गिर पड़ते हैं। और अपने पुत्रों के अपराध के लिए क्षमा माँगते हैं।

'मम पुत्रापराधात् तु शाङ्र्गपाणे! व वाधुना।
एतन्मे त्रिादशाध्यक्षः पदयोः पतितं शिरः।। [9]

महाकवि भास ने दूत का वर्णन करते हुए राजाओं महा–राजाओं की कूटनीति व्यवस्था का वर्णन किया है।

'कर्णभार' नाटक में कौरव पांडव युद्ध के अवसर पर राजा इन्द्र ऐसी ही कूटनीति के द्वारा दानवीर कर्ण से कवच और कुंडल प्राप्त करने जाता है वह ब्राह्मण वेशधारी मधुर–भाषी होकर भिखारी के रूप में कर्ण से दान माँगता है। इन्द्र अपनी कूटनीति से जाल में कर्ण को फांस लेता है और कर्ण से कुंडल और कवच प्राप्त कर लेता है।

अङ्गैः सहैव जनितं मम देहरक्षा
दैवासुरैरपि न भेद्यमिदं सहस्त्रौ।
देय तथापि कवच सह कुण्डला भ्याँ
प्रीत्या मया भगवते रूचितं यादिस्यात। [10]

राजतन्त्रा की प्रशंसा

भास के नाटकों में राजतन्त्र की प्रशंसा की गई है। भिन्न–भिन्न अवसरों पर राजाओं का यश–गान किया है। उनकी दानशीलता, पराक्रम और लोक–कल्याण की भावना को चित्रित किया है। विभिन्न नाटकों के अन्त में दिए गए भरत वाक्य में सुयोग्य राजाओं को आहूत किया गया है कि सुयोग्य राजा हम सब पर सुशासन करे।

सर्वत्र सम्पदः सन्तु नश्यन्तु विपदः सदा।
राजा राजगुणोपेतो भूमिमेकः प्रशास्तु नः।। [11]

उदयन वैभवशाली राजा है और सदैव हाथी पर सवार होकर भ्रमण करने जाते थे।

धर्माचरण

रामायण काल में पुरुष ही नहीं स्त्रियाँ भी संध्यावादन किया करती थी। रामायण में वर्णित है कि प्रतिदिन हवन करना नियमित दिनचर्या का एक अनिवार्य कर्तव्य था। सभी स्त्री पुरुष प्रतिदिन हवन किया करते थे।

भास के समय में भी देवता को प्रसन्न करने के लिए हवन किया जाता था।

तृप्तोऽग्नि र्हविषाऽमरोत्तमुखं तृप्ता द्विजेन्द्रा धनै।
स्तृप्ता पक्षिगणाश्च गो गण युतास्ते तेन नराः सर्वशः।। [12]

संगीत

वाल्मीकि रामायण में कवि ने संगीत के वाद्य यन्त्रों का वर्णन किया है। अयोध्या नगरी में दुन्दभि मृदङ्ग वीणा पवण आदि पद्यो की मधुर ध्वनि सदैव गूंजती रहती थी। उत्सवों में भी वाद्य यन्त्रा बजते थे। [17]

भास के समय में बजाए जाने वाले वाद्य यन्त्र में नगाड़े, शंख, दुन्दुभि जैसे वाद्य यन्त्रा थे। उत्सवों पर ये वादय यन्त्रा बजाए जाते थे। 'पंचरात्रम्' में महाराज विराट की वर्षगांठ का उत्सव हो रहा था तब वृद्धगोपाल कहता है कि सभी तरफ धूल ही धूल उड़ रही है। शंख व दुन्दुभि की आवाज भी उठ रही है।

न खलु रेणु रेव, शङ्खदुन्दुभिघोष उत्पतितः। [13]

'उरूभंग' नाटक में भास ने वर्णन किया है–

सन्नाहदुन्दुभिनिनाद वियोग मूके।
विक्षिप्त वाण कवच व्यजनात पत्रो।। [14]

वस्त्रपरिधान

महाकवि भास ने अपने नाटक 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण में यौगन्धरायण के पहनावे का वर्णन किया है। वह तेज और चमकती हुई तलवार लिए हुए सफेद पगड़ी बांधे हुए विद्युत युक्त मेघ के समान दिखाई दे रहे थे।

निशितविमखङ्गः सहत्तोन्मत्तवेषः।
कनकर चितकर्म व्याग्रावामाग्रहस्तः
विरचितबहु चीरः पाण्डरावद्धपट्टः
सतदिदिव पचोदः किञ्चिदुद्गीर्णचन्द्रः [15]

'दूतवाक्य' नाटक में दुर्योधन का वर्णन भास कवि ने किया है। वह सांवला युवक और श्वेत वस्त्र का उत्तरीय धारण किया हुआ दुर्योधन छत्र, चामर श्रेष्ठ तथा शरीर में अङ्गरागदि लगाकर शोभित हो रहा है।

वह धनवान आभूषणों में मणियों की छटा से ऐसा शोभित हो रहा है जैसे नक्षत्रों के मध्य पूर्ण चन्द्रमा की शोभा होती है।

श्यामो युवा सितदुकूलकृतोत्तरीयः
सच्छत्रायामखरो रचिताङ्गरागः।
श्रीयान विभषण मणि युतिरञ्जिताङ्गो
नक्षत्रामध्य इव पर्वगतः शशाङ्क।। [16]

निष्कर्षतः कहा जाए तो भास के नाटकों पर रामायण समाज का व्यापक प्रभाव दिखाई पड़ता है। भास के नाटकों पर रामायण कालीन समय का व्यापक प्रभाव प्रदर्शित होता है। समाज, राजनीति, धार्म आदि के क्षेत्र में भासकालीन समाज पूर्ववर्ती समाज चेतना से प्रभावित था। कवि ने अपनी रचनाओं में जिस समाज का वर्णन किया है। उसके आदर्शों पूर्ववर्ती समाज से ग्रहीत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अविमारक नाटक प्रथम अंक, पृष्ठ 17
2. वाल्मीकि रामायण, पृष्ठ 169
3. चारूदत्त, तृतीय अंक, पृष्ठ 82
4. वाल्मीकि रामायण से प्रगतिशील प्रेरणा, पृष्ठ 137
5. वाल्मीकि रामायण, पृष्ठ 167
6. अविमारक नाटक, पृष्ठ 64
7. वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड तृतीय सर्ग, पृष्ठ 207
8. वाल्मीकि रामायण, सप्तम् सर्ग, श्लोक 9, पृष्ठ 207
9. वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड, पृष्ठ 154
10. कर्णभारम् प्रथम अंक 55 श्लोक, पृष्ठ 46
11. कर्णभारम् श्लोक 21, पृष्ठ 22
12. कर्णभारम् प्रथम अंक श्लोक 25, पृष्ठ 27
13. पंचरात्राम् प्रथम अंक, पृष्ठ 5
14. वाल्मीकि रामायण श्लोक 18, पृष्ठ 42
15. पंचरात्राम् प्रथम अंक 2, पृष्ठ 54
16. ऊरूभग नाटक प्रथम अंक, पृष्ठ 48
17. प्रतिज्ञायौगंधरायण 4/3, पृष्ठ 111
18. दूतवाक्यम् प्रथम अंक, पृष्ठ 3